পাঠ 24
पाठ

যক্ষ প্ৰশ্ন

(শিক্ষক শ্ৰেণী কোঠাত সোমোৱাৰ লগে লগে ছাত্ৰ-ছাত্ৰী সকলে থিয়হৈ তেওঁক অভিবাদন জনালে। শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ হাজিৰা ললে।)

শিক্ষক : ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকল, যোৱা সপ্তাহত মম্প মহাভাৰতৰ 'যক্ষ প্ৰশ্ন' অধ্যায়টো তোমালোকৰ পঢ়াম্পছিলোঁ। আজি আমি তাকে অভিনয় কৰিম। কোৱাচোন, তোমালোকৰ কোনে কোনে ম্পয়াত ভাগ ল'বা?

(তিনিজন ছাত্ৰ অভিনয় কৰিবৰ বাবে ঠিয় হ'ল।)

শিক্ষক : ঠিক আছে। বিমল, অবিনাশ তোমালোক দুয়ো অভিনয় কৰিবা। আৰু সুশান্ত, তুমি যক্ষ পৰ্বৰ

(शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं। छात्र-छात्राएँ उनका अभिवादन करते हैं। शिक्षक उनकी हाजरी लेते हैं।)

शिक्षक : प्रिय विद्यार्थियो! हम लोगों ने पिछले सप्ताह महाभारत का प्रसंग 'यक्ष-प्रश्न' पढ़ा था। आज हम उसका अभिनय करेंगे। बताओ, तुम में से कौन-कौन इसमें भाग लेगा?

(तीन छात्र अभिनय करने के लिए खड़े होते हैं।)

शिक्षक : अच्छा, विमल, अविनाश तुम लोग अभिनय करोगे। सुशांत तुम यक्ष-पर्व की भूमिका पेश करोगे।

(सुशांत शुरु करता है)

ভূমিকাডোখৰ ক'বা।

(সুশান্তম্প আৰম্ভ কৰিলে)

সুশান্ত : ৰাজ্যৰ পৰা নিৰ্বাসিত পঞ্চ পাণ্ডৱ আৰু দ্ৰৌপদী বনে বনে ঘূৰি ফুৰিছিল। এনেতে দ্ৰৌপদীৰ পিয়াহ লগাত তেওঁ যুধিষ্ঠিৰক পানী আনিবলৈ কলে। যুধিষ্ঠিৰে পানীৰ সন্ধান কৰিবলৈ ভীমক পঠিয়াম্প দিলে। কিন্তু বহু বিচৰাৰ পিছতো ভীমে ক'তো পানী নেপালে। তেতিয়া ধৰ্মম্প পুত্ৰ যুধিষ্ঠিৰৰ বিপত্তি দেখি সৰোৱৰৰ ঐা সৃষ্টি কৰি দিলে আৰু পাণ্ডৱৰ পৰীক্ষা ল'বৰ বাবে তেওঁ যক্ষৰ ৰূপ ধৰি সৰোবৰৰ পাৰত ৰৈ থাকিল।

শিক্ষক : সুন্দৰ হৈছে সুশান্ত। তাৰ পিছত কি হ'ল?

সুশান্ত : পানী বিচাৰি বিচাৰি ভীম আহি সেম্প সৰোবৰৰ পাৰত উপস্থিত হ'ল। যক্ষম্প ভীমক ক'লে -- 'শুনা পাণ্ডুপুত্ৰ, পানী খোৱাৰ আগতে মোৰ প্ৰশ্ন কেম্পৗমানৰ

सुशांत : पाँचों पांडव द्रौपदी के साथ निर्वासित होकर जंगल-जंगल भटक रहे थे। रास्ते में द्रौपदी को प्यास लगी। द्रौपदी ने युधिष्ठिर से पानी के लिए कहा। युधिष्ठिर ने भीम को पानी की तलाश में भेजा। पर भीम को कहीं पानी नहीं मिला। तब धर्म ने युधिष्ठिर की विपत्ति को देखकर एक सरोवर का निर्माण कर दिया लेकिन पांडवों की परीक्षा लेने के लिए धर्म यक्ष के रूप में सरोवर के किनारे खड़े हो गए।

शिक्षक : बहुत अच्छा। अब आगे बताओ क्या हुआ?

सुशांत : उसके बाद भीम पानी की तलाश में उसी सरोवर पर जा पहुँचा। यक्ष ने भीम से कहा -- सुनो पांडुपुत्र! पानी पीने से पहले तुम्हें मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। लेकिन भीम ने प्रश्न को अनसुना कर दिया और पानी पीने के लिए आगे बढ़ गया। पानी पीते ही भीम अचेत हो गया। इसीप्रकार पानी की तलाश में आए अर्जुन, नकुल और सहदेव भी पानी पीकर अचेत हो गए। तब खुद युधिष्ठिर सरोवर पर पहुँचे। यक्ष ने उनसे भी प्रश्नों के उत्तर देने के

উত্তৰ দিয়া।' কিন্তু ভীমে যক্ষক অবজ্ঞা কৰি পানী খাবৰ বাবে আগবাঢ়িল। সৰোবৰৰ পানী খাওঁতেম্প ভীম অচেতন হৈ পৰিল। ঠিক এম্পদৰেম্প অর্জুন,

নকুল আৰু সহদেৱৰো একে দশা হোৱাত যুধিষ্ঠিৰ নিজেম্প পানী বিচাৰি সৰোবৰৰ পাৰত উপস্থিত হ'লহি। যক্ষম্প তেওঁকো প্রশ্ন কেম্পািমানৰ উত্তৰ দিবলৈ কলে।

শিক্ষক : ৰবা সুশান্ত। এতিয়া বিমল আৰু অবিনাশে অভিনয় কৰিব।

(অভিনয় আৰম্ভ হ'ল)

যক্ষ : ৰবা যুধিষ্ঠিৰ। তুমি পানী নাখাবা। প্রথমে মোৰ প্রশ্নৰ উত্তৰ দিয়া। তাৰ পাছত হে পানী খাব পাৰিবা। নহলে তোমাৰো সৰু ভায়েৰাহঁতৰ দৰেম্প দশা হব।

যুধিষ্ঠিৰ : ভাল কথা। আপুনি আপোনাৰ প্রশ্ন

लिए कहा।

शिक्षक : ठीक है सुशांत। अब विमल और अविनाश अभिनय करेंगे।

(अभिनय शुरु होता है।)

यक्ष : रुको युधिष्ठिर! पानी पीने से पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। नहीं तो अपने छोटे भाइयों की सी दशा तुम्हारी भी होगी।

युधिष्ठिर: अच्छी बात है। आप अपने प्रश्न पूछें, हे मायावी देव! मैं उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

সোধক -- হে মায়াবী দেৱতা! মম্প উত্তৰ দিবলৈ চেষ্টা কৰিম।

যক্ষ : বাৰু কোৱা, বেলিটো সদায় কাৰ আদেশত ওলায়?

যুধিষ্ঠিৰ : বেলিটো সদায় পৰম ব্ৰহ্মৰ নিৰ্দেশতহে ওলায়।

যক্ষ : বাৰু, বিপদত মানুহক কিহে ৰক্ষা কৰে?

যুধিষ্ঠিৰ : মানুহক বিপদত কেৱল সাহসেহে ৰক্ষা কৰে। অম্পন একোৱে নোৱাৰে।

যক্ষ : ঠিকেম্প কৈছা। এম্পবাৰ কোৱা, কি শাস্ত্ৰ পঢ়িলে মানুহ জ্ঞানী হয়?

যুধিষ্ঠিৰ : কোনো শাস্ত্ৰ পঢ়ি মানুহ জ্ঞানী হব নোৱাৰে। সৎ লোক আৰু মহাপুৰুষৰ সংগম্পহে মানুহক জ্ঞানী কৰে।

যক্ষ : বাৰু, পৃথিৱীৰ বাহিৰে অম্পন কোনে আমাক ভালকৈ ৰক্ষা কৰে?

যুধিষ্ঠিৰ : আমাৰ সহনশীলা মাতৃয়েহে

यक्ष : अच्छा बताओ -- सूरज किसके आदेश से रोज निकलता है?

युधिष्ठिर: परम ब्रह्म के निर्देश से।

यक्ष : अच्छा, विपत्ति में मनुष्य की कौन रक्षा करता है?

युधिष्ठिर: केवल साहस ही मनुष्य की विपत्ति में रक्षा करता है। दूसरा कोई नहीं।

यक्ष : ठीक! अब बताओ कौन-सा शास्त्र पढ़ने पर मनुष्य ज्ञानी बनता है?

युधिष्ठिर: कोई भी शास्त्र पढ़कर मनुष्य ज्ञानी नहीं बनता। सत्संग से ही मनुष्य ज्ञानी बनता है।

यक्ष : बताओ! पृथ्वी को छोड़कर दूसरे कौन हमारी रक्षा करते हैं?

युधिष्ठिर: हमारी सहनशीला माँ, हमारी ठीक से रक्षा करती है।

यक्ष : अब बताओ, आकाश से भी ऊँचा क्या है?

আমাক ভালকৈ ৰক্ষা কৰে।

যক্ষ : ভাল কথা, এম্পবাৰ কোৱা, আকাশতকৈ ওখ কি?

যুধিষ্ঠিৰ : পিতৃদেৱেম্প সকলোতকৈ ওখ।

যক্ষ : বাৰু, বায়ুতকৈ বেগৱান কোন কোৱা?

যুধিষ্ঠিৰ : মনতকৈ বেছি বেগৱান কোনো নাম্প।

যক্ষ : সবাতোকৈ বেছি দহনশীল কি?

যুধিষ্ঠিৰ : শোকাতুৰ হৃদয়তকৈ বেছি দহনশীল একো নাম্প।

যক্ষ : বিদেশত থকাজনৰ বাবে প্ৰকৃত বন্ধু কোন?

যুধিষ্ঠিৰ : বিদ্যাম্প পৰম বন্ধু। িকা-পম্পচাতকৈ বিদ্যাম্পহে বিদেশত প্ৰকৃত সহায়ক।

যক্ষ : সুখ ক'ত পোৱা যায়, কোৱা?

যুধিষ্ঠিৰ : সজ প্ৰবৃত্তি বা সজ আচৰণহেত সুখ পোৱা যায়।

যক্ষ : লোকপ্ৰিয় হবলৈ মানুহে কি বস্তু

युधिष्ठिर: पिता सब से ऊँचा होता है।

यक्ष : अच्छा, वायु से तेज कौन है?

युधिष्ठिर: मन से तेज और कोई नहीं।

यक्ष : सब से अधिक दहनशील वस्तु क्या है?

युधिष्ठिर: शोकार्त्त हृदय से अधिक दहनशील कुछ नहीं है।

यक्ष : परदेश में स्वाभाविक बंधु कौन है?

युधिष्ठिर: विद्या ही सबसे अच्छा मित्र है। विदेश में विद्या ही काम में आता है।

यक्ष : सुख कहाँ मिलता है - बताओ।

युधिष्ठिर: सहज प्रवृत्ति या सदाचार में सुख मिलता है।

यक्ष : लोकप्रिय बनने के लिए आदमी को क्या त्याग करना चाहिए?

युधिष्ठिर: लोकप्रिय बनने के लिए आदमी को आत्माभिमान का त्याग करना चाहिए।

यक्ष : दुःखों का मूल कारण क्या है?

युधिष्ठिर: गुस्सा ही दुःखों का मूल कारण है।

यक्ष : कौन-सी चीज़ न रहने पर आदमी

त्याग কৰা উচিত?

যুধিষ্ঠিৰ : লোকপ্ৰিয় হবলৈ মানুহে আত্মাভিমান ত্যাগ কৰা উচিত।

যক্ষ : দুঃখৰ মূল কাৰণ কি?

যুধিষ্ঠিৰ : খঙেই দুঃখৰ মূল কাৰণ।

যক্ষ : কি বস্তু নহলে মানুহ ধনী হব পাৰে?

যুধিষ্ঠিৰ : আশা বা কামনা পৰিত্যাগ কৰিলে মানুহ সম্পদশালী হয়।

যক্ষ : যুধিষ্ঠিৰ, সংসাৰত সবাতোকৈ আশ্চৰ্য্য কি?

যুধিষ্ঠিৰ : 'মানুহ মৰণশীল' বুলি জানিও মানুহে জীয়াই থাকিবলৈ আকাংক্ষা কৰাটোৱেই সকলোতকৈ আচৰিত কথা।

যক্ষ : তোমাৰ উত্তৰত মই প্ৰসন্ন। মই ধৰ্মৰাজ। মোৰ পৰীক্ষাত তুমি উত্তীৰ্ণ হৈছা। তোমাক কি লাগে কোৱা।

যুধিষ্ঠিৰ : প্ৰণাম! ....

अमीर बन सकता है?

युधिष्ठिर: आशा या कामना का त्याग करने पर आदमी अमीर बन सकता है।

यक्ष : युधिष्ठिर, संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर: मनुष्य मरता है -- इस बात को जानते हुए भी मनुष्य की जीवित रहने की आकांक्षा -- सबसे बड़ा आश्चर्य है।

यक्ष : तुम्हारे उत्तरों से मैं संतुष्ट हूँ। मैं धर्मराज हूँ। मेरी परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हुए हो। तुम्हें क्या चाहिए, बताओ।

युधिष्ठिर: प्रणाम! .....
(बीच में टोक कर)

शिक्षक : बहुत सुंदर! किंतु यक्ष ने तो चार ही प्रश्न किए थे, तुमने तेरह प्रश्न बना दिए।

विमल और
अविनाश : महाशय! वे कौन से थे?

शिक्षक : वे प्रश्न थे --

सबसे वेगवान कौन है?
सबसे श्रेष्ठ कौन है?
सबसे सुखी कौन है? और
सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

इन चारों प्रश्नों के सही उत्तर देने

শিক্ষক : সুন্দৰ হৈছে। কিন্তু যক্ষম্পটো চাৰিৰ্া প্ৰশ্নহে কৰিছিল, তোমালোকে দেখোন তেৰ্া বনাম্প দিলা।

বিমল আৰু

অবিনাশঃ চাৰ, সেম্প কেম্পৗনো কি কি আছিল?

শিক্ষক : সেম্প কেম্পৗ আছিল --

সকলোতকৈ বেগৱান কোন?

সকলোতকৈ শ্ৰেষ্ঠ কোন?

সকলোতকৈ সুখী কোন?

সকলোতকৈ ডাঙৰ আশ্চৰ্য্য কি?

এম্প চাৰিঔা প্ৰশ্নৰ সঠিক উত্তৰ দিয়াৰ পিছত যক্ষম্প যুধিৰ্ষ্ঠিৰক সুধিছিল যে চাৰিওজন ভায়েকৰ ভিতৰত তেওঁ কাক জীৱিত অবস্থাত পাবলৈ বিচাৰে। তেতিয়া যুধিৰ্ষ্ঠিৰে সহদেৱৰ নাম কলে। যক্ষম্প আচৰিত হৈ সুধিলে, ‘তুমি নিজৰ সহোদৰ ভাম্পকেম্পজনক এৰি

पर यक्ष ने युधिष्ठिर से कहा, बताओ इन चारों भाइयों में से तुम किसे जीवित देखना चाहते हो। युधिष्ठिर ने सहदेव को जीवित करने के लिए कहा। यक्ष ने पूछा, ऐसा ही क्यों? तुम अपने सगे भाइयों को छोड़कर सहदेव को जीवित क्यों देखना चाहते हो? युधिष्ठिर ने कहा -- इसलिए कि सहदेव माद्री का पुत्र है और सबसे छोटा और प्रिय है। वह जीवित होगा तो कुंती की तरह माद्री का

भी एक पुत्र तो जीवित रहेगा। युधिष्ठिर के विचारों को सुनकर यक्ष प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा -- तुमने सचमुच धर्म की रक्षा की है। मैं तुम्हारे चारों भाइयों को जीवित करता हूँ।

अब आज का पाठ यहीं समाप्त होता है। कल हम लोग दूसरा पाठ शुरु करेंगे।

সহদেৱক কিয় জীৱিত অবস্থাত বিচাৰা?’ যুধিষ্ঠিৰে কলে বোলে সহদেৱ মাদ্রীৰ সন্তান, আৰু সকলোতকৈ সৰু আৰু প্ৰিয়। সহদেৱ জীয়াম্প থাকিলে কুন্তীৰ দৰে মাদ্রীৰো এঁা সন্তান জীয়াম্প থাকিব। যুধিষ্ঠিৰৰ উত্তৰ শুনি যক্ষ সন্তুষ্ট হ’ল আৰু কলে ‘তুমি সঁচাম্প ধৰ্মৰ ৰক্ষক, মম্প তোমাৰ চাৰিওজন ভায়েৰাকে জীৱিত কৰি দিম।’

আজি আমি ম্পয়াতে শেষ কৰিছোঁ। কালিলৈ আমি দ্বিতীয় পাঠটো আৰম্ভ কৰিম।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	हिन्दी अर्थ
হাজিৰা	हाजरी, उपस्थिति
সপ্তাহ	सप्ताह
অধ্যায়	अध्याय
থিয়	खड़ा
পিয়াহ	प्यास

সন্ধান	संधान
পঠিয়াম্প দিলে	भेज देना
বিপত্তি	विपत्ति
অবজ্ঞা	अवज्ञा, अनसुना
ৰূপধৰি	के रूप में, भेस बदलना
পাৰত	किनारे पर
নির্বাসিত	निर्वासित
বনে বনে	वन-वन, जंगलों में
তালৈ	वहाँ
আৰ্ত্ত	आर्त्त
এজন এজনকৈ	एक-एक करके
নুশুনিলে	नहीं सुना
ফলত	फलस्वरूप
মূৰ্চ্ছিত	मूर्च्छित
কথোপকথন	वार्तालाप
ৰবা	रुको
নহলে	नहीं तो
ভায়েৰাহঁত	भाइयों
দশা	दशा/अवस्था
সোধক	पूछिए
মায়াবী	मायावी
বেলিটো	सूरज
পৰম ব্ৰহ্ম	परम ब्रह्म
অম্পন	दूसरा
	कुछ भी

একোৰে
শাস্ত্র
জ্ঞানী
সংগ
বাহিৰে
সহনশীলা
ভালকৈ
এম্পবাৰ
আকাশতকৈ
ওখ
বেগৱান
দহনশীল
শোকাতুৰ
বিদেশত
প্ৰবৃত্তি
খং
মূল
ধনী
পৰিত্যাগ
সম্পদশালী
আশ্চৰ্য্য
মৰণশীল
জীয়াম্প
প্ৰসন্ন

शास्त्र
ज्ञानी
संग
छोड़
सहनशीला
अच्छी तरह
इस बार
आकाश से
ऊँचा
तेज
दहनशील
शोकार्त्त
विदेश में
प्रवृत्ति
क्रोध, गुस्सा
मूल
धनी, अमीर
परित्याग
समृद्धिशाली
आश्चर्य
मरणशील
जीवित
प्रसन्न, संतुष्ट
उत्तीर्ण
अनगिनत

উত্তীৰ্ণ
অশেষ
জীৱিত
সন্তান
সেম্পকেম্পৌ
সকলোতকৈ
সঠিক

जीवित
संतान
वे सब
सबसे
सटीक

অভ্যাস

I. উদাহৰণ অনুসৰি বাক্য পৰিবৰ্ত্তন কৰক।

উদাহৰণঃ

(ক) তেওঁ নাযায়। মম্প যাম।

→ তেওঁ নাযায়, মম্প হে যাম।

1. তেওঁ সভালৈ নাহিল। মম্প আহিলোঁ।
2. ৰামে কথাটো নুশুনিলে। শ্যামে শুনিলে।
3. এম্পয়া পম্পচা মম্প দিয়া নাম্প। মায়ে দিছে।
4. দিখৌত পানী বঢ়া নাম্প। ব্ৰহ্মপুত্ৰত বাঢ়িছে।
5. উন্নত দেশৰ জনসংখ্যা বঢ়া নাম্প। অনুন্নত দেশৰ জনসংখ্যা বাঢ়িছে।

(খ) তুমি প্ৰথমতে উত্তৰ দিয়া। তাৰ পিছত যাব পাৰিবা।

→ তুমি উত্তৰ দিহে যাব পাৰিবা।

1. মম্প প্ৰথমতে ঘৰলৈ যাম। তাৰ পিছত বজাৰলৈ যাম।
2. অসমীয়া তিৰোতাম্প প্ৰথমতে গা ধোৱে। তাৰ পাছত ৰন্ধা-বঢ়া কৰে।
3. মম্প প্ৰথমতে ষ্টেচনলৈ আহিলোঁ। তাৰ পিছত গম পালোঁ যে ৰেল বন্ধ।

4. আমি সকলোৱে প্ৰথমতে জলপান খাওঁ। তাৰ পিছতহে চাহ খাওঁ।

5. মম্প বস্তুটো প্ৰথমতে ভালকৈ চাম। তাৰ পিছত কিনিম।

II. বন্ধনীৰ ভিতৰত দিয়া শব্দবোৰৰ ভিতৰত শুদ্ধ শব্দটো বাচি বাক্য পূৰণ কৰক।

1. কোনেও মোৰ কথা ________ । (শুনিলে/নুশুনিলে/নুশুনিব)
2. আজিকালি কাৰো পৰা সহায় পোৱা ____________ । (নাযায়/যায়/নগৈছিল)
3. মম্প বহুত দিন কলৈকো ______ । (গৈছোঁ/যোৱা নাম্প/যাম)
4. বৰ গণ্ডগোল কাৰো কথা ________ । (নুশুনি/শুনি/শুনা যায়)
5. মম্প অসমলৈ কতবাৰ ______ তাৰ কোনো হিচাব নাম্প। (গৈছোঁ/যোৱা নাম্প/যাম)
6. ধৈৰ্যৰ বাহিৰে বিপদত আন একোৱে ৰক্ষা কৰিব _____ । (পাৰে/নোৱাৰে/নপাৰে)

III. সমানৰ্থক শব্দ লিখি প্ৰতিটো শব্দৰে একোটাকৈ অৰ্থপূৰ্ণ বাক্যৰচনা কৰক।

1. আপোনা-আপুনি
2. প্ৰকৃততে
3. ধুনীয়া
4. তিৰোতা মানুহ
5. দেৰিকৈ

IV. উদাহৰণ অনুসৰি ঐ বাক্যত উত্তৰ দিয়ক।

উদাহৰণঃ দেউতাকৰ মাকক কি কয় ? : আম্পতা

1. দেউতাকৰ ভায়েকক কি কয়?
2. দেউতাকৰ দেউতাকক কি কয়?

3. মাকৰ ভনীয়েকক কি কয়?
4. বায়েকৰ গিৰিয়েকক কি কয়?
5. খুড়াকৰ ঘৈনীয়েকক কি কয়?

V. পাঠৰ জ্ঞানৰ ভিত্তিত সংক্ষেপে উত্তৰ দিয়ক।

1. পঞ্চ পাণ্ডৱৰ পৰীক্ষা লবলৈ কোন আহিছিল?
2. বেলিটো সদায় কাৰ আদেশত ওলায়?
3. মানুহক বিপদত কিহে ৰক্ষা কৰে?
4. আকাশতকৈ ওখ কি?
5. দুঃখৰ মূল কাৰণ কি?
6. যুধিষ্ঠিৰৰ উত্তৰত যক্ষ সন্তুষ্ট হ'ল নে?

VI. বহলাম্প উত্তৰ দিয়ক।

1. এম্প পাঠটো পঢ়ি আপুনি কি নতুন কথা শিকিলে তাৰ ওপৰত দুআষাৰ লিখক।
2. ছাত্ৰকেম্পজনে সংলাপত কি কি নতুন কথা যোগ কৰিলে লিখক।
3. যুধিষ্ঠিৰৰ মহানুভৱতাৰ বিষয়ে দুআষাৰ লিখক।

পঢ়ক আৰু বুজি লওক **(I)**

শৰসন্ধান

মহাভাৰতৰ কথা। পঞ্চপাণ্ডৱ তেতিয়া বালক। পাৰম্পৰিক নিয়ম মতেম্প পঞ্চপাণ্ডৱ আৰু কৌৰৱ ভাতৃগণক যুদ্ধশিক্ষা প্ৰদান কৰিবলৈ দ্ৰোণাচাৰ্য্যক নিয়োগ কৰা হ'ল। গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প

পাণ্ডৱ আৰু কৌৰৱগণক অস্ত্ৰশিক্ষাৰ পাঠ দিয়া আৰম্ভ কৰিলে। এম্পদৰে কিছুদিন শিক্ষা প্ৰদান কৰাৰ পিছত গুৰুৱে তেওঁৰ ছাত্ৰসকলৰ অগ্ৰগতিৰ পৰীক্ষা লবলৈ থিৰ কৰিলে।

গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প ঐা কাঠৰ পখী অনাম্প তাক এজোপা ওখ গছত আঁৰি দিয়ালে আৰু সকলো শিক্ষাৰ্থীকে তালৈ মাতিলে। সকলো উপস্থিত হোৱাৰ লগে লগে দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প তেওঁৰ পৰীক্ষা আৰম্ভ কৰিলে। প্ৰথমতে যুধিষ্ঠিৰ আগবাঢ়ি আহিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প যুধিষ্ঠিৰক ধনু-শৰ তুলি লবলৈ কলে আৰু গছৰ ওপৰত থকা কাঠৰ পখীাৈলৈ আঙুলিয়াম্প তালৈ লক্ষ্য থিৰ কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিলে। যুধিষ্ঠিৰে ততালিকে লক্ষ্য স্থিৰ কৰি গুৰুদেৱৰ আদেশলৈ ৰৈ থাকিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প যুধিষ্ঠিৰক সুধিলে -- ‘তুমি কি দেখিছা?’ যুধিষ্ঠিৰে উত্তৰ দিলে -- ‘গুৰুদেৱ, মম্প বৃক্ষ, কাঠৰ চৰাম্প, মোৰ মৰমৰ ভাতৃগণ আৰু আপোনাক দেখিছোঁ।’ যুধিষ্ঠিৰে এম্পদৰে উত্তৰ দিয়াত গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প তেওঁক ধনু-কাঁড় নমাম্প থবলৈ আদেশ দিলে।

যুধিষ্ঠিৰৰ পাছত ভীম, দুৰ্যোধন আৰু তেওঁৰ ভাতৃগণক এজন এজনকৈ আহি লক্ষ্য স্থিৰ কৰিবলৈ আদেশ কৰিলে। তেওঁলোক প্ৰত্যেকেম্প ধনু-শৰ তুলি লোৱাৰ পাছত দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প এজন এজন কৈ প্ৰত্যেককে ‘কি দেখিছা’ বুলি সোধাত সকলোৱে যুধিষ্ঠিৰৰ দৰে উত্তৰ দিলে। তেতিয়া দ্ৰোণাচাৰ্য্য খঙত অগ্নিশৰ্মা হৈ শিষ্যসকলক ধনু-শৰ নমাম্প থবলৈ দি নানান তিৰস্কাৰ কৰিলে।

শেষত তেওঁ অৰ্জুনক ধনু-শৰ লবলৈ কলে আৰু লক্ষ্য স্থিৰ কৰিবলৈ দিলে। অৰ্জুনে ধনুৰ গুণ ানি লক্ষ্যলৈ চাম্প গুৰুৰ আদেশলৈ অপেক্ষা কৰি থাকিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প অৰ্জুনক সুধিলে -- ‘তুমি কি দেখিছা?’ তেতিয়া অৰ্জুনে কলে -- ‘গুৰুদেৱ, মম্প গছৰ ওপৰত থকা চৰাম্পা মাত্ৰ দেখিছোঁ।’ আনন্দিত হৈ দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প পুনৰ সুধিলে -- ‘তুমি পক্ষীাৰ কি কি অংগ দেখিবলৈ পাম্পছা?’ তেতিয়া অৰ্জুনে কলে যে তেওঁ গোম্পে পক্ষীা দেখা নাম্প; মাত্ৰ চকু সহ মূৰাহে দেখিছে। তেতিয়া গুৰুৱে অৰ্জুনক পক্ষীাৰ শিৰ কাঁটিবলৈ নিৰ্দেশ দিলে। গুৰুৰ আদেশ পোৱা মাত্ৰকে অৰ্জুনে তেওঁৰ ধনুত শৰসন্ধান কৰিলে। অৰ্জুনৰ ধনুৰ তীক্ষ্ণবাণে কাঠৰ পক্ষীাৰ মূৰ দেহৰ পৰা বিচ্ছিন্ন কৰি পেলালে। দ্ৰোণাচাৰ্য্য অতিশয় আনন্দিত হ’ল। তেওঁ

অৰ্জুনক ‘বিশ্বৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ ধনুৰ্দ্ধৰ হোৱা’ বুলি আশীৰ্বাদ দিলে। তাৰ পাছত তেওঁ অৰ্জুনক আলিংগন কৰিলে।

ঘটনা দেখি বাকী ৰাজকোঁৱৰ সকলে লাজতে তলমূৰ কৰিলে। তেওঁলোকৰ কাৰো বুজিবলৈ বাকী নাথাকিল যে কি কাৰণত অৰ্জুন গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ প্ৰিয়পাত্ৰ।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	हिन्दी अर्थ
কিছুদিন	कुछ दिन
আঁৰি দিয়া	लटका दिया
আগবাঢ়ি	आगे बढ़कर
লক্ষ্য থিৰ/লক্ষ্য স্থিৰ কৰা	निशाना लगाना
পখী/পক্ষী	पक्षी
চৰাম্প	चिड़िया
সুধিলে	पूछा
এম্পদৰে	इसी तरह
ততালিকে	शीघ्र
খং	गुस्सा
অগ্নিশৰ্মা	बुरी तरह गुस्सा होना
নমাম্প	उतार कर
তিৰস্কাৰ	तिरस्कार
গুণ	गुणवत्ता
অপেক্ষা	अपेक्षा
	सिर

শিৰ

আদেশ

নিৰ্দেশ

শৰসন্ধান

তীক্ষ্ণবাণ

নিক্ষেপ

বিচ্ছিন্ন

অতিশয়

ধনুৰ্দ্ধৰ

আলিংগন

লাজত

তলমূৰ

প্ৰিয় পাত্ৰ

आदेश

निर्देश

निशाना लगाना

पैना बाण

तीर चलाना

टूट-फूट जाना

सबसे बड़ा

धनुर्धर

आलिंगन

लज्जित होकर

सिर झुकना

सबसे प्रिय

পঢ়ক আৰু বুজি লওক (II)

শিষ্টাচাৰ

শিষ্টাচাৰ মানৱ চৰিত্ৰৰ দাপোণ স্বৰূপ। শিষ্ট আৰু আচাৰ এম্প দু৷ শব্দ লগ লাগি শিষ্টাচাৰ হৈছে। জন্ম, শিক্ষা আৰু পৰিবেশৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি মানৱ স্বভাৱে ৰূপ লয়। যাৰ স্বভাৱ বা আচৰণ সজ তেওঁকে সৎস্বভাবী বা শিষ্টাচাৰী বোলে। স্পয়াৰ বিপৰীত হলে অসৎ বা ব্যভিচাৰী বুলি কোৱা হয়।

শিষ্টাচাৰৰ কেতবোৰ প্ৰধান লক্ষণ আছে। সৎ স্বভাৱতো হবম্প লাগিব। তাক গঢ় দিব -- আন্তৰিক দয়া, সৰলতা, স্বভাৱৰ নম্ৰতা আৰু বিনয়ে। পূজনীয়জনৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধা, মিঠা মাত, সজ আচৰণ, খোলা মন শিষ্টাচাৰীৰ চিৰ সহচৰ। শিষ্টাচাৰীয়ে কেতিয়াও কাকো আঘাত নিদিয়ে। আনে কথা কলে তেওঁৰ কথা সম্পূৰ্ণ শুনে। মাজতে মাত নিদিয়ে। আৱশ্যক হলে অম্পনে কোৱাৰ পিছত নিজৰ মন্তব্য দিয়ে। আনৰ কথা মন দি শুনে। নিজৰ কথা বঢ়াম্প নকয়।

লোকৰ ভুল দেখি তেওঁ নাহাঁহে। নিজৰো যে ভুল হব পাৰে -- সেম্প বিষয়ে সদায় সজাগ থাকে।

আগতেম্প কোৱা হৈছে যে শিক্ষা, সংস্কাৰ, সংগ আৰু পৰিবেশ আদিয়ে শিষ্টাচাৰ গঠনত সহায় কৰে। জীৱনত কৃতকাৰ্য্য হবলৈ বা উন্নতি কৰিবলৈ আমি সজ আচৰণ আৰু শিষ্টাচাৰ শিকা উচিত। বৰ্তমান সমাজত এম্প গুণৰ নিতান্ত অভাৱ পৰিলক্ষিত হৈছে। ৰাজনৈতিক জীৱনৰ দূষিত প্ৰভাৱে আমাৰ সামাজিক জীৱনো কলুষিত কৰিছে। আমি মনত ৰখা উচিত যে উদ্ধত জ্ঞানীতকৈ শিষ্টাচাৰী অজ্ঞও ভাল। সেয়ে আমি প্ৰথমৰে পৰা নিজৰ আচৰণ শুদ্ধ কৰিবলৈ বা নিজে শিষ্টাচাৰী হবলৈ চেষ্টা কৰা উচিত। মানৱতাৰ এম্প মুখ্য প্ৰমূল্যৰ আসন সদায় শ্ৰেষ্ঠ হৈ থাকিব।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	হিন্দী অৰ্থ
শিষ্টাচাৰ	शिष्टाचार
দাপোণ	दर्पण
শিষ্ট	शिष्ट

আচাৰ	आचरण
সজ	सत्
ব্যভিচাৰী	व्यभिचारी
কেতবোৰ	कुछ
প্ৰধান	मुख्य/प्रधान
লক্ষণ	लक्षण
হবম্প	होगा ही
গঢ় দিয়া	रूप देना
বিনয়	विनम्रता
মিঠা-মাত	मीठी बोली
খোলা মন	खुला मन
চিৰ সহচৰ	चिर-सहचर
কেতিয়াও	कभी भी
কাকো	किसी को
আঘাত	आघात
নাহাঁহে	नहीं हँसता है
সজাগ	जागरूक
আগতেম্প	पहले ही
শিকা	सीखना
পৰিলক্ষিত	परिलक्षित
দূষিত	दूषित
কলুষিত	कलुषित/कलंकित
উদ্ধত	उद्धत
অজ্ঞ	मूर्ख
	गुणवत्ता

প্ৰমূল্য

অভ্যাস

I. তলত দিয়া প্ৰতিযোৰ শব্দৰ পৰা প্ৰতিটো শব্দ ব্যৱহাৰ কৰি একোটাকৈ অৰ্থপূৰ্ণ বাক্য ৰচনা কৰক।

1. লক্ষ্য : লক্ষ
2. বাণ : বান
3. ধনু : ধেনু
4. অগ্নিশৰ্মা : অগ্নিকাণ্ড
5. তিৰস্কাৰ : পুৰস্কাৰ

II. তলত দিয়া প্ৰতিটো শব্দকে একাধিক অৰ্থত ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি। প্ৰতিটো শব্দৰে ভিন ভিন অৰ্থ প্ৰকাশ কৰিব পৰাকৈ ভিন ভিন বাক্য ৰচনা কৰক।

1. গুণ

2. পাত্ৰ

3. শৰ

4. ৰূপ

5. পাতল

III. তলত দিয়া প্ৰতিটো শব্দৰ পৰা এক বা একাধিক প্ৰতিশব্দ উলিয়াম্প সেম্পবোৰ ব্যৱহাৰ কৰি বেলেগ বেলেগ বাক্য ৰচনা কৰক।

1. শিৰ

2. পখী
3. গছ
4. কাঁড়
5. বন

IV. তলত দিয়া অনুচ্ছেদটোৰ পৰা বিপৰীতাৰ্থক শব্দবোৰ বাচি উলিয়াই সেইবোৰ ব্যৱহাৰ কৰি একোটাকৈ বাক্য ৰচনা কৰক।

"সুখ আৰু দুখ একেটা মুদ্ৰাৰে এপিঠি-সিপিঠি বুলি কব পাৰি। জীৱনটো সুখ আৰু দুখৰ সমষ্টি। এই পৃথিৱীত কোনো কাৰো আপোন বা পৰ নহয়। কোনো মানুহেই জন্মতেই ভাল বা বেয়া হৈ নাহে। মানুহৰ কাৰ্য্যইহে জীৱনৰ সফলতা বা বিফলতা নিৰ্ণয় কৰে। গতিকে মৃত্যুলৈকে মানুহে মানৱীয় প্ৰমূল্য সমূহৰ চৰ্চা আৰু সাধনা কৰা উচিত।

V. পাঠৰ আলমত উত্তৰ দিয়ক।

1. শৰসন্ধান পাঠটোৰ গূঢ়তত্ব কি বুলি ধাৰণা হয়, বহলাই লিখক।
2. দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ বিষয়ে দুআষাৰ লিখক।
3. 'বিদ্যালয়ত শিষ্টাচাৰ শিকোৱা উচিত' তাৰ ওপৰত এটা টোকা লিখক।
4. শিষ্টাচাৰীৰ থাকিব লগীয়া গুণ কি কি? আলোচনা কৰক।

VI. তলৰ কথোপকথনটো সম্পূৰ্ণ কৰক।

ৰাজেশ : হেল্ল' হেল্ল' অভিজিৎ নেকি?

অভিজিৎ : কোন, ৰাজেশ নেকি?

ৰাজেশ : অ'। তোৰ ভাল নে?

অভিজিৎ : আছোঁ আৰু এক প্ৰকাৰ। .... ।

ৰাজেশ : .... । মাৰাহঁতৰ খবৰ কেনে?

অভিজিৎ : ভালেম্প আছে। .... ।

ৰাজেশ : যোৱা পৰহি মম্প **North Eastern Regional College**ত যোগদান কৰিলোঁ।

অভিজিৎ : অভিনন্দন। .... ।

ৰাজেশ : বৰ্তমানলৈকে অংক শাস্ত্ৰহে পঢ়াম্পছোঁ।

অভিজিৎ : .... ।

ৰাজেশ : বৰ্তমানে ১২ হাজাৰকৈ দিছে।

অভিজিৎ : এম্পবাৰ তেনেহলে বিয়াখন পাও।

ৰাজেশ : এতিয়াম্প বিয়া বাৰুৰ কথা পাতিবৰ হোৱা নাম্প। আগতে ঘৰটোৰ অলপ মেৰামতিৰ কাম কৰাম্প লওঁ বুলি ভাবিছোঁ। .... ।

অভিজিৎ : ময়ো বিয়াৰ কথা বৰ্তমান ভাবা নাম্প। কিন্তু দেউতাহঁতেতো পাতোঁ পাতোঁকৈয়ে আছে।

ৰাজেশ : তম্প এদিন এম্পফালে আহ। তম্প অলপ সময় লৈয়ে আহিবি।

অভিজিৎ : বাৰু ঠিক আছে।

VII. হিন্দীলৈ অনুবাদ কৰক।

(নিজা সংবাদদাতা)

২৩ এপ্ৰিল, নগাওঁ

বিগত বছৰবোৰ দৰে এম্পবাৰো নগাওঁ জিলাৰ *বৰদৈচিলা ৰঙালী বিহু উৎসৱ সমিতিৰ* উদ্যোগত আয়োজিত সাংস্কৃতিক সন্ধিয়াৰ অনুষ্ঠান যোৱা ২১ এপ্ৰিলত অনুষ্ঠিত হৈ যায়। বন্তি প্ৰজ্বলনেৰে এম্প অনুষ্ঠানৰ শুভাৰম্ভ কৰে নগাওঁ জিলাৰ উপায়ুক্ত প্ৰতীক হাজেলাম্প। নগাওঁ

মহাবিদ্যালয়ৰ অধ্যক্ষ মহেন্দ্ৰ মালাকাৰে আঁত ধৰা অনুষ্ঠানটোত বিশিষ্ট অতিথিৰ ভাষণ প্ৰদান কৰে শিল্পী প্ৰণৱ বৰুৱাই।

বিবেকানন্দ ভট্টাচাৰ্য্যৰ তবলা বাদনেৰে নিশাৰ সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান আৰম্ভ হয়। প্ৰাঞ্জল শইকীয়াই আবৃত্তি কৰা কবিতাই দৰ্শক শ্ৰোতাক আপ্লুত কৰে। শিৱসাগৰৰ জোনবিৰি বিহুৱাদলে প্ৰদৰ্শন কৰা বিহুৱে সাংস্কৃতিক অনাষ্ঠানক বিশেষ সৌষ্ঠব প্ৰদান কৰে। নিশা ১০ বজাৰ লগে লগেই অসমৰ স্বনামধন্য শিল্পী ডা. ভূপেন হাজৰিকাই শ্ৰোতালৈ তেওঁৰ গীতৰ শৰাই আগবঢ়ায়। ‘গংগা মোৰ মা’ৰে আৰম্ভ কৰা হাজৰিকাৰ সুললিত কণ্ঠই উপস্থিত প্ৰায় ২০ হাজাৰ দৰ্শকক তিনি ঘণ্টা সময় মন্ত্ৰমুগ্ধ কৰি ৰাখে।

এই সাংস্কৃতিক সন্ধিয়া নৱ প্ৰজন্মৰ শিল্পী জুবিন গাৰ্গৰ অনুষ্ঠান প্ৰদৰ্শনৰ পিছত নিশা প্ৰায় ৩ বজাত অন্ত পৰে।

VIII. অসমীয়ালৈ অনুবাদ কৰক।

तेजपुर 10 सितंम्बर।

नपाम में आज तेजपुर विश्वविद्यालय का छठा दीक्षांत समारोह सोत्साह संपन्न हो गया। असम के राज्यपाल लेफटिनेंट जनरल (अवकाश प्राप्त) श्री अजयसिंह (जो विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं) ने समारोह की अध्यक्षता की तथा उपाधियाँ वितरित कीं।

इस अवसर पर अंतरिक्ष विज्ञान केन्द्र, बेंगलोर के अध्यक्ष डॉ. यू.आर. राव ने दीक्षांत भाषण दिया। डॉ. राव ने भारत में विज्ञान खासकर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का विवरण देते हुए कहा कि 2020 तक हम अपना अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर अवश्य उतार देंगे। उन्होंने भारतीय वैज्ञानिकों की क्षमता और प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में राज्यपाल श्री अजयसिंह ने विशेष योग्यता प्राप्त करनेवाले छात्रों को बधाई दी। उन्होंने भारतीय प्रतिभा के पलायन पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि सभी को देश की उन्नति के लिए काम करना चाहिए।

तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के आभार-प्रदर्शन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

शाम को विश्वविद्यालय-प्रांगण में युवाओं द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिहुगीतों और बिहुनृत्यों ने समा बाँध दिया।

IX. **(i)** ৰাময়ণৰ ঐা চৰিত্ৰৰ বিষয়ে আপোনাৰ নিজৰ ভাষাত লিখক।

(ii) ভাৰতৰ ঐা জলন্ত সমস্যাৰ বিষয়ে ঐা অনুচ্ছেদ লিখক।

ৗিপ্পনি

এতিয়ালৈ পোৱা পাঠবোৰত আমি অসমীয়া ভাষাৰ বিভিন্ন ব্যাকৰণগত বৈশিষ্ট্য আৰু বাক্য-ৰীতিৰ বিষয়ে আলোচনা কৰিলোঁ। সাধাৰণতে দৈনন্দিন জীৱনত ব্যৱহাৰ হোৱা শব্দাৱলী আৰু বাক্য-ৰীতিৰ উদাহৰণ ১ৰ পৰা ২৩ পৰ্যন্ত পাঠত দিয়া হৈছে। ভূত, ভবিষ্যৎ আৰু বৰ্ত্তমান কালৰ বিভিন্ন ৰূপ আৰু বিভক্তি সমূহৰ বিশেষ প্ৰয়োগ, সৰ্বনামৰ মূল আৰু তিৰ্য্যক ৰূপৰ উদাহৰণ আগৰ পাঠবোৰত দিয়া হৈছে। লগতে প্ৰত্যেক পাঠতে উল্লেখ হোৱা সাংস্কৃতিক শব্দ আদিৰ বিষয়েও ৗোকা দিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে।

এম্প পাঠৗোত সকলো ধৰণৰ ব্যাকৰণগত প্ৰয়োগৰ পুনৰাবৃত্তি কৰিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে। লোকপ্ৰিয় ঐা কাহিনীৰ মাধ্যমেৰে এপিনে মানৱীয় প্ৰমূল্যৰ তাত্ত্বিক দিশত ৰেখাপাত কৰা হৈছে, আন পিনেদি কম শব্দেৰে অসমীয়া ভাষাৰ লিখাৰ উদাহৰণো তুলি ধৰা হৈছে। শিক্ষাৰ্থীসকলে এম্প বিভিন্ন প্ৰয়োগ সমূহলৈ মন কৰিব।

ভাষা অভ্যাসেৰেহে শিকিব পাৰি। কথাতে কয় ‘অভ্যাসৰ নৰ, কৰ্ণ পথে কৰে শৰ।’ সেয়ে শিক্ষাৰ্থীসকলে বিভিন্ন প্ৰয়োগসমূহৰ বাৰে বাৰে অভ্যাস কৰা উচিত।

****